Amire Ahle Sunnat Se Eid Ke
Bare Me 23 Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 346
Weekly Booklet : 346

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का तह़रीरी गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से ईद के बारे में 23 सुवाल जवाब

सफ़ह़ात 16

ईदुल फ़ित्र क्यूं मनाई जाती है ? 02
ईद की ख़ुशी में गाने बजाना कैसा ? 08
क्या औरत पर भी ईद की नमाज़ पढ़ना वाजिब है ? 06
क्या ईद की नमाज़ अकेले पढ़ सकते हैं ? 11

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अमीरे अहले सुन्नत से ईद के बारे में 23 सुवाल जवाब[1]

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला : **"ईद के बारे में 23 सुवाल जवाब"** पढ़ या सुन ले उस की परेशानियां दूर फ़रमा और उस की वालिदैन समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "اَكْثِرُوا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَاِنَّهٗ مَشْهُوْدٌ تَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ وَاِنَّ اَحَدًا لَنْ يُّصَلِّيَ عَلَيَّ اِلَّا عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهٗ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهَا" या'नी जुमुआ़ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो क्यूं कि येह यौमे मश्हूद (या'नी मेरी बारगाह में फ़िरिश्तों की ख़ुसूसी ह़ाज़िरी का दिन) है, इस दिन फ़िरिश्ते (ख़ुसूसी त़ौर पर कसरत से मेरी बारगाह में) ह़ाज़िर होते हैं, जब कोई शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है तो उस के फ़ारिग़ होने तक उस का दुरूद मेरे सामने पेश कर दिया जाता है ।" ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि मैं ने अ़र्ज़ की : (**या रसूलल्लाह** !) और आप के विसाल के बा'द क्या होगा ? इर्शाद फ़रमाया : "हां (मेरी ज़ाहिरी) वफ़ात के बा'द भी (मेरे सामने इसी त़रह़ पेश किया जाएगा) ।" "اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ" या'नी **अल्लाह** पाक ने ज़मीन के लिये अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के जिस्मों का

[1]... ... येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है ।

खाना ह़राम कर दिया है।" فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُرْزَقُ पस **अल्लाह** पाक का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़्क़ भी अ़त़ा किया जाता है।" (ابن ماجہ، 2/291، حدیث:1637)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सुवाल : ईदुल फ़ित्ऱ को मीठी ईद क्यूं कहते हैं ?

जवाब : ईदुल फ़ित्ऱ को मीठी ईद शायद इस लिये कहा जाता है कि इस ईद में ईद की नमाज़ से पहले त़ाक़ अ़दद में खजूर खाई जाती है जो कि मुस्तह़ब है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/311)

सुवाल : ईदुल फ़ित्ऱ की नमाज़ से पहले मीठी चीज़ खाने का शर्अ़न क्या हुक्म है ?

जवाब : ईदुल फ़ित्ऱ की नमाज़ से पहले मीठी चीज़ त़ाक़ अ़दद में खाना सुन्नत है। (فتاوٰی ہندیہ، 1/149) हमारे मुआ़शरे में लोग इस पर अ़मल भी करते हैं कि ईदुल फ़ित्ऱ की नमाज़ से पहले घरों में सिवय्यां पकाई जाती हैं और लोग खा कर नमाज़ पढ़ने जाते हैं। नमाज़ के बा'द शीर ख़ुरमा और पूरियां वग़ैरा खाते हैं। मेरी आ़म त़ौर पर येह आ़दत रही है कि ईदुल फ़ित्ऱ की नमाज़ से पहले थोड़ी मिक़्दार में सिवय्यां खा लेता हूं, ज़ियादा नहीं खाता कि येह मैदे की बनी हुई होती हैं तो सिह़्ह़त के लिये नुक़्सान देह भी हो सकती हैं। (इस मौक़अ़ पर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने फ़रमाया :) ईदुल फ़ित्ऱ की नमाज़ से पहले कुछ मीठा खा लेना चाहिये, हमारे घर में जिस वक़्त दीनी माह़ोल नहीं था उस वक़्त भी हमें ईदुल फ़ित्ऱ की नमाज़ से पहले खजूर खिलाई जाती थी। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/283)

सुवाल : ईदुल फ़ित्ऱ क्यूं मनाई जाती है ?

जवाब : जो लोग रमज़ानुल मुबारक में तरावीह़ पढ़ते हैं, मशक़्क़तें

बरदाश्त करते हैं तो उन्हें मग़्फ़िरत के परवाने तक़्सीम किये जाते हैं। उन लोगों के लिये **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से एक ख़ुशी का दिन है, जिस दिन वोह ख़ुशी मनाते हैं। ईद की रात को लैलतुल जाइज़ह (इन्आ़म वाली रात) भी कहते हैं। (3695:حدیث،336/3،شعب الایمان, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/240)

सुवाल : ईदुल फ़ित्ऱ को छोटी ईद और ईदुल अज़्ह़ा को बड़ी ईद क्यूं कहते हैं ?

जवाब : ईदुल फ़ित्ऱ को छोटी ईद और ईदुल अज़्ह़ा को बड़ी ईद कहना येह अ़वामी इस्ति़लाह़ है जो लोगों में मश्हूर है। मैं तो ईदुल फ़ित्ऱ और ईदुल अज़्ह़ा ही कहता हूं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 9/122)

सुवाल : क्या ईद के दिन नए कपड़े पहनने पर सवाब मिलता है ?

जवाब : ईद के दिन नए या धुले हुए उ़म्दा कपड़े पहनना मुस्तह़ब है। (149/1،فتاوی ہندیہ) बशर्ते कि सवाब की निय्यत से पहने, अगर फ़ख़्र और दिखावे के लिये पहनेगा तो सवाब के बजाए गुनाह का ह़क़दार होगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 9/179)

सुवाल : अ़न्क़रीब "लैलतुल जाइज़ह" (या'नी ईदुल फ़ित्ऱ की रात) आने वाली है, इस रात में कौन सी इ़बादत करना अफ़्ज़ल है ?

जवाब : ईद की सारी रात जाग कर इ़बादत करना थोड़ा दुश्वार होता है कि सुब्ह़ ईदुल फ़ित्ऱ की नमाज़ पढ़नी और इस के लिये तय्यारी भी करनी होती है लिहाज़ा हर कोई पूरी रात जाग कर इ़बादत कर सके येह ज़रूरी नहीं। बहर ह़ाल सारी रात जाग कर इ़बादत नहीं कर सकते तो इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ कर भले सो जाएं और फ़ज्र की नमाज़ भी बा जमाअ़त पढ़ें तो इस त़रह़ भी सारी रात इ़बादत करने का सवाब मिल

जाएगा और येह फ़ज़ीलत सिर्फ़ चांदरात के लिये ख़ास नहीं है बल्कि जो शख़्स हर रोज़ इशा व फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ता है उसे रोज़ाना सारी रात इबादत करने का सवाब मिलता है।[1]

ईदैन की रात में इबादत करने की फ़ज़ीलत

''लैलतुल जाइज़ह'' या'नी ईदुल फ़ित्र की रात इबादत करने की बड़ी फ़ज़ीलत है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने ईदैन की रात त़लबे सवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे। (ابن ماجہ، 2/365، حدیث:1782) एक और मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि जो पांच रातों में शब बेदारी (या'नी रात जाग कर इबादत) करे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है, ज़ुल ह़िज्जा की आठवीं, नवीं, दसवीं रात, ईदुल फ़ित्र की रात और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत।

(الترغیب والترہیب، 2/98، حدیث:2)

मुआ़फ़ी का ए'लाने आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की एक रिवायत में येह भी है : जब ईदुल फ़ित्र की मुबारक रात तशरीफ़ लाती है तो उसे ''लैलतुल जाइज़ह'' या'नी ''इन्आ़म की रात'' के नाम से पुकारा जाता है। जब ईद की सुब्ह़ होती है तो **अल्लाह** पाक अपने मा'सूम फ़रिश्तों को तमाम शहरों में भेजता है, चुनान्चे वोह फ़रिश्ते ज़मीन पर तशरीफ़ ला कर सब गलियों और राहों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और इस त़रह़ निदा

1 ... ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो नमाज़े इशा जमाअ़त से पढ़े गोया उस ने आधी रात क़ियाम किया और जो फ़ज्र जमाअ़त से पढ़े गोया उस ने पूरी रात क़ियाम किया। (مسلم، ص258، حدیث:1491)

देते हैं : "ऐ उम्मते मुहम्मद ! उस रब्बे करीम की बारगाह की त़रफ़ चलो ! जो बहुत ज़ियादा अ़त़ा करने वाला और बड़े से बड़ा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है।" फिर **अल्लाह** पाक अपने बन्दों से यूं मुख़ात़िब होता है : "ऐ मेरे बन्दो ! मांगो ! क्या मांगते हो ? मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के रोज़ इस (नमाज़े ईद के) इज्तिमाअ़ में अपनी आख़िरत के बारे में जो कुछ सुवाल करोगे वोह पूरा करूंगा और जो कुछ दुन्या के बारे में मांगोगे उस में तुम्हारी भलाई की त़रफ़ नज़र फ़रमाऊंगा (या'नी इस मुआ़मले में वोह करूंगा जिस में तुम्हारी बेहतरी हो)। मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जब तक तुम मेरा लिह़ाज़ रखोगे मैं भी तुम्हारी ख़त़ाओं की पर्दापोशी फ़रमाता रहूंगा। मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें ह़द से बढ़ने वालों (या'नी मुजरिमों) के साथ रुस्वा न करूंगा। बस अपने घरों की त़रफ़ मग़्फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ। तुम ने मुझे राज़ी कर दिया और मैं भी तुम से राज़ी हो गया।"

(الترغیب والترہیب، 2/60، حدیث:23) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/299,301)

सुवाल : "जो शख़्स ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा की रात क़ियाम करेगा तो उस का दिल उस वक़्त नहीं मरेगा जब लोगों का दिल मर जाएगा।" यहां पर दिल के न मरने से क्या मुराद है ?

जवाब : ह़दीसे पाक में है : जिस ने ईदैन की रातों में सवाब की निय्यत से क़ियाम किया तो उस का दिल उस वक़्त नहीं मरेगा जिस वक़्त लोगों के दिल मर जाएंगे। (ابن ماجہ، 2/365، حدیث:1782) इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में है : दिल का न मरना चन्द मा'ना रखता है : ﴿1﴾ उस का दिल दुन्या की मह़ब्बत में डूब कर आख़िरत से दूर नहीं होगा ﴿2﴾ उस का दिल बुरे ख़ातिमे से मह़फ़ूज़ रहेगा। (فیض القدیر، 6/248، تحت الحدیث:8903) ﴿3﴾ क़ब्र के

सुवालात और मैदाने महशर में भी उस का दिल मुत्मइन रहेगा । (حاشیۃ الصاوی علی الشرح الصغیر، 1/527) उलमाए किराम फ़रमाते हैं : येह फ़ज़ीलत अक्सर रात इबादत करने से भी हासिल हो जाएगी मसलन अगर रात आठ घन्टे की है तो पांच घन्टे इबादत करने से भी येह फ़ज़ीलत मिल जाएगी ।[1] नीज़ एक क़ौल येह भी है कि ईदैन की रात तहज्जुद पढ़ने से भी येह फ़ज़ीलत हासिल हो जाएगी । (मिरआतुल मनाजीह, 2/262) इस हदीसे पाक की शर्ह पढ़ कर मुम्किन है कि हर एक का येह जेहन बन जाए कि ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो ज़रूर ईदैन की रात में क़ियाम करूं ।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/305)

सुवाल : क्या औरत पर ईद की नमाज़ पढ़ना वाजिब है ?

जवाब : जी नहीं ! औरत पर ईद की नमाज़ पढ़ना वाजिब नहीं है ।

(फ़तावा रज़विय्या, 27/615, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/284)

सुवाल : क्या सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم भी एक दूसरे को ईद की मुबारक बाद देते थे ?

जवाब : जी हां ! सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم भी एक दूसरे को ईद की मुबारक बाद दिया करते थे और दुआ भी देते थे कि تَقَبَّلَ اللّٰہُ مِنَّا وَمِنۡكَ या'नी **अल्लाह** पाक हमारे और आप के आ'माल क़बूल फ़रमाए । (سنن الکبریٰ للبیہقی، 3/446، حدیث:2694) हम में से भी हर एक को चाहिये कि जब भी किसी को ईद की मुबारक बाद दें तो साथ में येह दुआ भी दे दें । ईद की मुबारक बाद देते हुए इन अल्फ़ाज़ "تَقَبَّلَ اللّٰہُ مِنَّا وَمِنۡكَ" के साथ दुआ देना मुस्तहब है । (درمختار، 3/56, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/311)

1... जो बन्दा रात का अक्सर हिस्सा या निस्फ़ हिस्सा बेदार रह कर इबादत करे तो उस के लिये पूरी रात की बेदारी का सवाब लिखा जाता है । (قوت القلوب، 1/74)

सुवाल : ''ईद मुबारिक'' दुरुस्त है या ''ईद मुबारक'' ?

जवाब : कई लोग इस लफ़्ज़ को रा के ज़ेर के साथ या'नी ''मुबारिक'' पढ़ते हैं, ह़ालां कि येह रा के ज़बर के साथ है या'नी ''मुबारक'', क़ुरआने करीम में भी लफ़्ज़ ''मुबारक'' आया है।

(पारह : 17, अल अम्बियाअ : 50, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/131)

सुवाल : क्या तमाम इन्सान एक दूसरे को ईद की मुबारक बाद दे सकते हैं ? उ़मूमन ईद की मुबारक बाद देते हुए कज़िन और देवर भाबी सब आपस में हाथ मिलाते हैं, नीज़ जेठ भी भाई की बीवी के सर पर हाथ फेरता है क्या येह दुरुस्त है ?

जवाब : तमाम मुसल्मान आपस में एक दूसरे को मुबारक बाद दे सकते हैं, अलबत्ता शर्ई क़ुयूदात हर जगह होती हैं और इन्ही शर्ई क़ुयूदात की बिना पर ना मह़रम एक दूसरे को मुबारक बाद नहीं दे सकते। यूं ही देवर और भाबी भी एक दूसरे को मुबारक बाद नहीं दे सकते क्यूं कि अगर देवर और भाबी आपस में एक दूसरे को मुबारक बाद देंगे तो मेलजोल बढ़ेगा और गुनाहों के दरवाज़े खुल जाएंगे। ह़दीसे पाक में है : देवर भाबी के ह़क़ में मौत है। (ترمذی، 2/391، حدیث:1174) ना मह़रम वोह होते हैं जिन से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम नहीं होता। जेठ पर भी लाज़िम है कि भाई की बीवी के सर पर हाथ न फेरे। जहां तक आपस में हाथ मिलाने का तअ़ल्लुक़ है तो येह और भी ज़ियादा ख़त़रनाक और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका सब से ज़ियादा शैत़ान से मह़फ़ूज़ थी, इन से ज़ियादा और कौन शैत़ान से मह़फ़ूज़ हो सकता है ! फिर भी ''हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ में औ़रत का हाथ पकड़

कर कभी भी बैअ़त नहीं फ़रमाई ।" (بخاری،2/217،حدیث:2713) आज कल हमारे मुआ़शरे में ऐसे जाहिल पीर साहिबान भी मौजूद हैं जो औ़रत का हाथ पकड़ कर बैअ़त करवाते हैं और उन से अपने हाथ पर बोसा भी दिलवाते हैं, ऐसे पीरों से दूर रहने में ही आ़फ़ियत है ।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/306)

सुवाल : जो लोग काम के सिल्सिले में अपने घर से दूर होते हैं, ईद के दिन भी घर नहीं जा पाते तो ऐसे लोग अपने दोस्तों को बुला कर या अपने स्टाफ़ के साथ मिल कर ईद की खुशी गाने बाजे बजा कर मनाते हैं, क्या उन का ऐसा करना दुरुस्त है ?

जवाब : ईद के दिन तो बतौ़रे ख़ास **अल्लाह** पाक की इबादत करनी चाहिये और गुनाहों से बचना चाहिये । सदक़ा व ख़ैरात के ज़रीए ग़रीबों की मदद करनी चाहिये । जो लोग ईद की खुशियां हासिल नहीं कर पाते उन्हें भी अपने साथ खुशियों में शरीक करना चाहिये । ईद के दिन गाने बाजे बजा कर ईद की खुशी मनाना दुरुस्त नहीं है । आज कल के मुसल्मानों को क्या हो गया है कि ईद के दिन गाने बाजे बजा कर गोया इस बात की खुशी मनाते हैं कि आज शैतानें लईन आज़ाद हो गया है और उसे गाने बाजे बजा कर खुश किया जा रहा है । बसा अवक़ात इतनी ऊंची आवाज़ से म्यूज़िक बजाया जाता है कि सड़क से गुज़रने वाला शख़्स भी अगर म्यूज़िक से बचना चाहे तब भी नहीं बच सकता । बहर हाल ! सड़क से गुज़रने वाले शख़्स के लिये भी शर्अ़न येह हुक्म है कि अगर उस के कान में कहीं से म्यूज़िक की आवाज़ आ रही है तो कानों में उंगलियां डाल कर जल्दी से गुज़र जाए, अगर जान बूझ कर आहिस्ता आहिस्ता चलेगा कि म्यूज़िक की

आवाज़ आती रहे तो फिर येह भी गुनाहगार होगा। (ردالمحتار،9/651ماخوذاً) आज के ज़माने में مَعَاذَاللہ गुनाह करना बहुत आसान हो गया है मसलन दोस्तों में से कोई एक ए'तिकाफ़ में बैठा हुवा है, जैसे ही उस का ए'तिकाफ़ मुकम्मल होता है तो उस के दोस्तों ने उस के लिये तोहफ़तन सिनेमा घर का टिकट ख़रीद कर रखा होता है कि सारे दोस्त मिल कर مَعَاذَاللہ फ़िल्म देखेंगे। ईद के दिन Film theatre के बाहर बोर्ड लगा होता है कि आज हाउस फुल है। अब तो हर शख़्स के हाथ में मोबाइल मौजूद है, इस में तो पूरा सिनेमा घर आबाद है, आज का मुसल्मान अपने आप को आज़ाद महसूस करता है जब कि हक़ीक़तन मुसल्मान आज़ाद नहीं है बल्कि शरीअ़त के क़वानीन का पाबन्द है। एक मुसल्मान गुनाह कर के भी कहां तक भागेगा, उसे एक न एक दिन मौत तो आनी है। अगर **अल्लाह** पाक उस के गुनाहों के सबब नाराज़ हुवा तो क़ब्र और महशर में अ़ज़ाब ही मुक़द्दर बन जाएगा।

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 167)

ईद के दिन नया लिबास पहन कर कफ़न को नहीं भूलना चाहिये

हज़रते उ़बैदुल्लाह बिन शुमैत़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ बयान करते हैं : मेरे वालिदे माजिद हज़रते शुमैत़ बिन अ़जलान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने ईद के इज्तिमाअ़ में लोगों को देख कर फ़रमाया : ऐसे कपड़े दिखाई दे रहे हैं जो पुराने हो जाएंगे और ऐसे गोश्त नज़र आ रहे हैं जो कल (क़ब्र में) कीड़ों की ख़ूराक बनेंगे। (حلیۃ الاولیاء،3/153، رقم:3516) हर मुसल्मान को **अल्लाह** पाक से डरते रहना चाहिये, ईद के दिन अगर्चे बन्दा नया लिबास पहनता है लेकिन इस

नए लिबास की वज्ह से ग़फ़्लत में पड़ कर कफ़न को नहीं भूलना चाहिये, येह मुस्कुराहटें और ख़ुशियां बदने इन्सानी पर चन्द दिन के लिये होती हैं, इस के बा'द तो येह जिस्म क़ब्र में कीड़ों की ग़िज़ा बनता है। **अल्लाह** पाक हम सब को क़ब्र के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/308)

सुवाल : ईद के दिन बच्चों को क्या करना चाहिये ?

जवाब : जो बच्चा समझदार है, नमाज़ पढ़ना जानता है, मस्जिद में दीगर बच्चों की त़रह़ शरारत नहीं करता तो ऐसे बच्चे को मस्जिद में लाया जा सकता है। अगर ऐसा बच्चा है जो मस्जिद में शरारत करता है, जिस की वज्ह से नमाज़ी भी परेशान हो जाते हैं तो उसे मस्जिद में नहीं ले जा सकते। वालिदैन अपने बच्चे को ज़ियादा जानते हैं कि उन का बच्चा शरारत करता है या नहीं ? अब तो वैसे भी ईद का समां बना होता है और लोग नमाज़े ईद के लिये अपने बच्चों को साथ ले कर जाते हैं। बच्चों का ज़ेहन उ़मूमन ईद के दिन इबादत करने का नहीं होता, उन्हें हर त़रफ़ से कुछ न कुछ ईदी मिल रही होती है और इस के इ़लावा नए और उ़म्दा लिबास पहन कर खेलकूद में मगन होते हैं। जो बच्चे समझदार हैं उन्हें चाहिये कि ईद के दिन سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ 300 मरतबा पढ़ कर येह कहें कि "इस का सवाब ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام और दुन्या के तमाम मुसल्मानों को पहुंचे" इसी त़रह़ नाम ले कर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं मसलन इस का सवाब ग़ौसे पाक और आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا को पहुंचे, मज़ीद अपने दादा दादी, नाना नानी और दीगर रिश्तेदारों के नाम भी लिये जा सकते हैं, इसे ईसाले सवाब करना कहते हैं।

ईसाले सवाब में जिन जिन ह़ज़रात का नाम लिया जाता है वोह अपनी क़ब्र में ख़ुश होते हैं। इसे यूं समझ लीजिये कि किसी शख़्स ने बड़े पैमाने पर लोगों की दा'वत की है, उस दा'वत में कई घराने मौजूद हैं, उसी दा'वत में मेज़बान खुद किसी घराने की त़रफ़ तवज्जोह कर के नाम ले कर कहे कि "जनाब आप और लीजिये ना" अब जिस शख़्स का नाम ले कर मेज़बान ने कहा है तो वोह ज़रूर ख़ुश होगा कि यार इतने सारे लोगों में मेरा नाम ले कर मुझे ख़ास इ़ज़्ज़त बख़्शी है लिहाज़ा ईसाले सवाब करते हुए अपने बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ عَلَيۡهِم का भी नाम ले लेना चाहिये कि वोह अपने मज़ारात में ख़ुश होते हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/308)

सुवाल : अगर कोई मजबूरी की वज्ह से ईद की नमाज़ बा जमाअ़त नहीं पढ़ सका तो वोह तन्हा नमाज़ कैसे पढ़ेगा ?

जवाब : ईद की नमाज़ अकेले नहीं हो सकती। (هدایہ، 1/85) जमाअ़त इस के लिये ज़रूरी है और फिर इस की जमाअ़त की भी शराइत़ हैं मसलन जो इमाम पांच वक़्त की नमाज़ की इमामत की शराइत़ पर पूरा उतरता हो तब भी वोह ईद और जुमुआ़ नहीं पढ़ा सकता इस लिये कि ईद और जुमुआ़ की इमामत के लिये मज़ीद कुछ शराइत़ हैं, बहर ह़ाल अगर किसी की कोताही की वज्ह से ईद की नमाज़ रह गई और पूरे शह्र में कहीं भी न मिली तो गुनाहगार होगा लिहाज़ा तौबा करे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/452)

सुवाल : ईदी देने का क्या अन्दाज़ होना चाहिये ?

जवाब : ईदी देने का कोई मख़्सूस त़रीक़ा नहीं है, अलबत्ता मुसल्मान का दिल ख़ुश करने की निय्यत से ईदी दी जा सकती है, नीज़ जिस को ईदी दी जा रही है वोह अगर रिश्तेदार हो तो सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों के

www.dawateislami.net

साथ अच्छा सुलूक) की निय्यत भी कर ली जाए, यूं ही जिन बच्चों को ईदी देने से उन के वालिदैन ख़ुश होते हों तो ईदी देते हुए उन के वालिदैन को ख़ुश करने की निय्यत भी की जा सकती है। याद रखिये ! येह ज़रूरी नहीं कि हर बच्चे को ईदी देने से उस के वालिदैन ख़ुश हों, लिहाज़ा मौक़अ़ का लिह़ाज़ रखा जाए। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/194)

सुवाल : ईदी लिफ़ाफ़े में देना बेहतर है या बिग़ैर लिफ़ाफ़े के ?

जवाब : बच्चों को बिग़ैर लिफ़ाफ़े के ईदी देना बेहतर है, क्यूं कि नए और कड़क नोट देख कर बच्चे ज़ियादा ख़ुश होते हैं। हां ! उ़लमा और मशाइख़ को एह़तिरामन लिफ़ाफ़े में पैसे दिये जाएं ताकि दूसरों पर ज़ाहिर न हो।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/195)

सुवाल : ईद के दिन छोटे बच्चों को जो ईदी मिलती है, बच्चे उस ईदी को कैसे इस्ति'माल में ला सकते हैं ?

जवाब : ईद के दिन बच्चों को जो ईदी मिलती है बच्चे ही उस के मालिक होते हैं। कभी बच्चा ख़ुद समझदार होता है तो अपने पास कुछ न कुछ पैसे मह़फ़ूज़ कर लेता है। बच्चे अपनी ईदी अपने वालिद साह़िब के पास भी जम्अ़ करवा सकते हैं। सरपरस्त को भी चाहिये कि बच्चों की ईदी को अपने पास मह़फ़ूज़ रखे या उन्ही पैसों से बच्चों को कोई चीज़ दिला दे।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/307)

सुवाल : अगर किसी के वालिदैन ईद से तीन या छे महीने पहले फ़ौत हो जाएं तो क्या उन के घर वालों का पहली ईद मनाना जाइज़ है ?

जवाब : सोग तीन दिन तक जाइज़ है। हां ! अगर किसी औ़रत का शौहर इन्तिक़ाल कर गया है तो इस के सोग की मुद्दत चार महीने 10 दिन होती

है। (बहारे शरीअ़त, 1/855, हिस्सा : 4) किसी औ़रत का नौ जवान बेटा वफ़ात पा गया है तो उस की जुदाई का ग़म मां को पूरी ज़िन्दगी बे क़रार रखता है तो ऐसी औ़रत बेचारी अपने इख़्तियार में नहीं रहती। बहर ह़ाल ! तीन या छे महीने के बा'द ईद मनाई जा सकती है, ईद के नए कपड़े भी पहने जा सकते हैं और एक दूसरे को ईद मुबारक भी कहा जा सकता है। मय्यित के घर वाले बा'ज़ लोग इतनी बे वुक़ूफ़ी कर जाते हैं कि ईदुल अज़्ह़ा पर क़ुरबानी भी नहीं करते, यहां तक नौबत आ जाती है कि अपने घर में ख़ुशी का माह़ोल भी नहीं बनाते। बा'ज़ लोग ऐसे भी होते हैं कि लोगों के त़ा'नों से बचने के लिये क़ुरबानी के जानवर में एक ह़िस्सा मिला लेते हैं। याद रखिये ! ईद के दिन ख़ुशी का इज़्हार करना सुन्नत है और सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ईद के दिन ख़ुशी मनाना साबित है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/359) **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا﴾ (پ11، یونس:58) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें।" **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो रह़मत का दिन ईद का दिन है, इस दिन ख़ुशी का इज़्हार करना चाहिये।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/265)

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक के बा'द शव्वालुल मुकर्रम में जो रोज़े रखे जाते हैं उन का सवाब एक साल के रोज़ों के बराबर है या ज़िन्दगी भर के रोज़ों के बराबर ? नीज़ येह रोज़े शव्वाल में ही रखना ज़रूरी हैं या बा'द में भी रखे जा सकते हैं ?

जवाब : शव्वालुल मुकर्रम के रोज़ों की फ़ज़ीलत से मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा पेशे ख़िदमत हैं : ﴿1﴾ जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे और

फिर शव्वाल के छे रोज़े रखे तो वोह गुनाहों से ऐसे निकल गया गोया आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है। (مجم اوسط، 6/234، حدیث:8622) ﴿2﴾ जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर शव्वाल के छे रोज़े रखे तो गोया उस ने उ़म्र भर के रोज़े रखे। (مسلم، ص456، حدیث:2758) ﴿3﴾ जिस ने ईदुल फ़ित्र के बा'द शव्वाल में छे रोज़े रखे गोया उस ने साल भर के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाए उसे दस मिलेंगी तो माहे रमज़ान के रोज़े दस माह के बराबर हैं और येह छे रोज़े दो माह के बराबर यूं पूरे साल के रोज़े हो गए। (سنن کبریٰ للنسائی، 2/162-163، حدیث:2860-2861)

बहारे शरीअ़त के ह़ाशिये में है : बेहतर येह है कि येह रोज़े मुतफ़र्रक़ (या'नी जुदा जुदा) रखे जाएं और ईद के बा'द लगातार छे दिन में एक साथ रख लिये तब भी ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, 1/1010, ह़िस्सा : 5) बस ईद के दिन या'नी शव्वाल की पहली तारीख़ को रोज़ा नहीं रखना।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/468)

सुवाल : लोग कहते हैं कि ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा के दरमियान शादी बियाह जैसी तक़रीबात मुन्अ़क़िद नहीं करनी चाहिएं, इस की क्या ह़क़ीक़त है ?

जवाब : ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा के दरमियान शादी बियाह जैसी तक़रीबात मुन्अ़क़िद की जा सकती हैं बल्कि ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा के दिन भी येह तक़रीबात की जा सकती हैं। बहुत से लोग इन दिनों में शादी करते हैं, इस में कोई ह़रज नहीं है। पूरे साल में कोई भी दिन ऐसा नहीं है जिस दिन निकाह़ या शादी न हो सकती हो। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/231)

सुवाल : ईद के दिन 300 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ का वज़ीफ़ा मस्जिद में पढ़ना लाज़िमी होता है या घर में भी पढ़ सकते हैं ? नीज़ क्या औ़रतें भी येह वज़ीफ़ा पढ़ सकती हैं ?

जवाब : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ का वज़ीफ़ा मर्द और औरत दोनों पढ़ सकते हैं, इस वज़ीफ़े में कोई तख़्सीस नहीं है कि घर में पढ़ना है या मस्जिद में, जहां पढ़ने में आसानी हो वहां पढ़ सकते हैं। इस वज़ीफ़े की फ़ज़ीलत येह है : जो कोई ईद के दिन سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ 300 मरतबा पढ़ कर तमाम फ़ौत शुदा मुसल्मानों को ईसाले सवाब करेगा तो उन में से हर एक की क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल होंगे और जब इस वज़ीफ़े को पढ़ने वाला इन्तिक़ाल करेगा तो उस की क़ब्र में भी एक हज़ार अन्वार दाख़िल होंगे। (مکاشفۃ القلوب، ص308) ईद के दिन सुब्हे सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मुकम्मल दिन ईद का दिन है, इस में किसी भी वक़्त येह वज़ीफ़ा पढ़ सकते हैं, ईद के दिन रोज़ा रखना जाइज़ नहीं है। (فتاویٰ ہندیہ، 1/201, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/307)

सुवाल : क्या ईद के दिन भी मरीज़ों की इयादत करनी चाहिये ?

जवाब : जी हां, ईद के दिन भी मरीज़ों की इयादत करनी चाहिये। बसा अवक़ात मरीज़ ईद के पहले दिन अपने अज़ीज़ और दोस्त का इन्तिज़ार कर रहा होता है कि आज पहली ईद है, मेरा दोस्त मुझ से मिलने ज़रूर आएगा और ईद मुबारक कहेगा। अगर दोस्त ईद के पहले दिन के बजाए दूसरे दिन आए तो मरीज़ को इतनी ख़ुशी नहीं होगी जितनी ख़ुशी पहले दिन आने पर होती, फिर दोस्त भी दूसरे दिन आ कर त़रह़ त़रह़ के उ़ज़्र बयान करता है कि मेहमान आ गए थे या फ़ुलां चचा के घर ईद मिलने चला गया था। हो सके तो मरीज़ की माली मदद भी कीजिये कि बा'ज़ अवक़ात मरीज़ बहुत बुरी ह़ालत में होता है और डॉक्टर साह़िब ने कहा होता है कि फ़ुलां टेबलेट लेना बहुत ज़रूरी है, जब कि उस के पास टेबलेट ख़रीदने के लिये पैसे नहीं होते और तीमार दारी करने वाले ह़ज़रात फूल ले कर आ रहे होते हैं, ह़ालां कि बेहतर येह है कि मरीज़ को रक़म दे दी जाए जिस से

वोह अपनी ज़रूरिय्यात मसलन टेबलेट और दीगर दवाएं वग़ैरा ख़रीद सके। बसा अवक़ात तीमार दारी करने वाला अनजाने में वोही चीज़ ले आता है जिस की मरीज़ को परहेज़ करनी होती है मसलन मरीज़ को शूगर है और तीमार दारी करने वाला उस की दिलजूई की निय्यत से मिठाई ख़रीद कर ले आए तो बेचारा मरीज़ बिस्तर पर लैटे लैटे अपना दिल ही जलाएगा क्यूं कि वोह मिठाई नहीं खा सकता, बिलफ़र्ज़ अगर जोश में आ कर मिठाई खा भी ली तो बा'द में अज़िय्यत का शिकार हो जाएगा कि मिठाई तो शूगर के मरीज़ के लिये ज़हर की त़रह़ है, इस में बहुत ज़ियादा मिक़्दार में शूगर होती है जिस की वज्ह से शूगर का मरीज़ मर भी सकता है। फिर मिठाई बनाने वाले ख़राब खोया डाल देते हैं जिस की वज्ह से इन्सानी त़बीअ़त ख़राब हो जाती है। सब मिठाई बनाने वाले ऐसे नहीं होते लेकिन जो लोग ऐसा करते हैं उन्हें **अल्लाह** पाक से डरना चाहिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/310)

सुवाल : चांद नज़र आता है तो लोग आतश बाज़ी करते हैं, क्या ऐसा करना जाइज़ है ?

जवाब : हमारे हां (हिन्द) में ग़ैर क़ानूनी आतश बाज़ी मन्अ़ है लेकिन फिर भी ईद का चांद नज़र आने पर अ़वाम आतश बाज़ी करती है और तड़ा तड़ी लगी हुई होती है, ऐसा नहीं करना चाहिये। जब चांद नज़र आ जाए तो चांद देखने की दुआ़ पढ़नी चाहिये।[1]

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/316) (ابوداود،4/419،حدیث:5092ماخوذاً)

1... रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब हिलाल देखते तो येह दुआ़ पढ़ते اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! इसे हम पर अम्नो ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ तुलूअ़ फ़रमा, (ऐ चांद !) मेरा और तेरा रब, **अल्लाह** पाक है। (مستدرک حاکم،5/405،حدیث:7837) क़मरी महीने की पहली दूसरी और तीसरी रात के चांद को हिलाल कहते हैं इस के बा'द की रातों के चांद को क़मर कहते हैं। (مرقاۃ المفاتیح،5/283) येह दुआ़ पहली दूसरी और तीसरी रात तक पढ़ सकते हैं।

हफ़्तावार रिसाला मुतालआ

اَلْحَمْدُلِلّٰه !अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه/ ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलहाज अबू उसैद उबैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआओं से हिस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दावते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से ख़ुद भी पढ़ें और अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुतालआ)